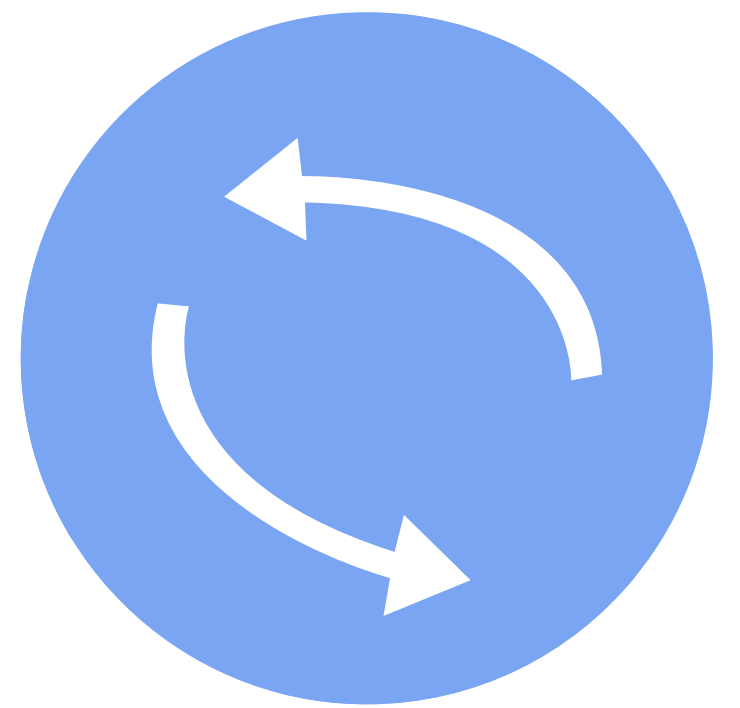


# IGNOU

# MPS-001

**SOLVED** MOST  
REPEATED  
QUESTIONS



Curated List of 30 Questions  
that are seen to be repeated  
frequently in the examinations.

*By* [FarLearner.com](https://FarLearner.com)

### 1 . जॉन रॉल्स के न्याय के सिद्धान्त की व्याख्या या आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

Found in June 2020 ( 4 ), June 2021 ( 3 ), Dec 2021 ( 3 ), June 2022 ( 3 ), Dec 2023 ( 6 ), Dec 2024 ( 6 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

**उत्तर :**जॉन रॉल्स आधुनिक राजनीतिक दर्शन के एक महत्वपूर्ण विचारक माने जाते हैं। उन्होंने न्याय की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसे न्याय का सिद्धान्त कहा जाता है। इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य समाज में समानता और न्यायपूर्ण व्यवस्था स्थापित करना था। रॉल्स के अनुसार समाज में संसाधनों और अवसरों का वितरण इस प्रकार होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को उचित अवसर प्राप्त हो सके। यद्यपि उनका सिद्धान्त अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है, फिर भी अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना भी की है।

सबसे पहली आलोचना यह की जाती है कि रॉल्स का सिद्धान्त अत्यधिक आदर्शवादी है। उन्होंने न्यायपूर्ण समाज की कल्पना करते समय ऐसी परिस्थितियों को मान लिया है जो वास्तविक समाज में हमेशा संभव नहीं होतीं। उदाहरण के लिए उन्होंने यह मान लिया कि लोग निष्पक्ष रूप से निर्णय लेने के लिए अपनी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत पहचान को भूलकर निर्णय करेंगे। आलोचकों का कहना है कि वास्तविक जीवन में मनुष्य अपने हितों और पहचान से पूरी तरह अलग होकर निर्णय नहीं ले सकता।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

दूसरी महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि रॉल्स का सिद्धान्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आर्थिक प्रोत्साहन के बीच संतुलन को पूरी तरह स्पष्ट नहीं करता। उन्होंने समान अवसर और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण की

## MPS-001 Most Repeated Questions

बात की है, लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि अत्यधिक समानता लागू करने से आर्थिक प्रगति और व्यक्तिगत पहल की भावना कम हो सकती है। यदि लोगों को अपनी मेहनत के अनुसार अधिक लाभ प्राप्त करने की स्वतंत्रता सीमित कर दी जाए तो इससे उत्पादन और विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

तीसरी आलोचना समुदायवादी विचारकों द्वारा की गई है। उनके अनुसार रॉल्स ने व्यक्ति को समाज से अलग करके देखा है। उनका सिद्धान्त व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों पर अधिक जोर देता है, जबकि समाज और समुदाय की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व देता है। समुदायवादी विचारकों का कहना है कि व्यक्ति का अस्तित्व समाज से जुड़ा होता है, इसलिए न्याय की अवधारणा को समझते समय सामाजिक परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक संबंधों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

कुछ विद्वानों ने यह भी कहा है कि रॉल्स का सिद्धान्त आर्थिक असमानता को पूरी तरह समाप्त नहीं करता। उन्होंने यह स्वीकार किया कि समाज में कुछ हद तक असमानता हो सकती है, बशर्ते वह समाज के सबसे कमजोर वर्ग के हित में हो। आलोचकों का तर्क है कि इस सिद्धान्त के कारण अमीर और गरीब के बीच अंतर बना रह सकता है। यदि असमानता को किसी सीमा तक स्वीकार कर लिया जाए तो यह सामाजिक न्याय के आदर्श को कमजोर कर सकता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि रॉल्स का सिद्धान्त मुख्य रूप से आधुनिक उदारवादी समाजों के संदर्भ में बनाया गया है। इसलिए इसे सभी समाजों और संस्कृतियों पर समान रूप से लागू करना

कठिन हो सकता है। विभिन्न समाजों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं, इसलिए न्याय की अवधारणा भी अलग रूप में विकसित हो सकती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इन आलोचनाओं के बावजूद रॉल्स का न्याय सिद्धान्त आधुनिक राजनीतिक दर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसने न्याय, समानता और अधिकारों के बारे में व्यापक चर्चा को प्रेरित किया है। अनेक विद्वानों ने उनके विचारों से प्रेरणा लेकर न्याय और सामाजिक व्यवस्था के नए सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रॉल्स का न्याय सिद्धान्त यद्यपि कुछ सीमाओं और आलोचनाओं से घिरा हुआ है, फिर भी उसने आधुनिक राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है। न्याय और समानता के विषय में विचार करने के लिए यह आज भी एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

2 . बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा को परिभाषित कीजिये और इसकी आलोचना की चर्चा कीजिये।

Found in June 2020 ( 10 ), June 2021 ( 9 ), June 2022 ( 9 ), June 2023 ( 8 ), June 2024 ( 9 ), Dec 2024 ( 7 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

**उत्तर :** बहुसंस्कृतिवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक अवधारणा है जिसका संबंध समाज में मौजूद विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और पहचानों के सह-अस्तित्व से है। इसका मूल विचार यह है कि एक समाज में अलग-अलग भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ और जीवन-शैलियाँ रखने वाले लोग सम्मान और समान अधिकारों के साथ एक साथ रह सकते हैं। बहुसंस्कृतिवाद इस बात पर जोर देता है कि सांस्कृतिक विविधता समाज की कमजोरी नहीं बल्कि उसकी शक्ति होती है।

आधुनिक विश्व में अनेक देशों में विभिन्न सांस्कृतिक समूह रहते हैं। प्रवास, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तन के कारण समाज अधिक विविध हो गए हैं। इस स्थिति में यह आवश्यक हो गया कि विभिन्न सांस्कृतिक समूहों की पहचान और अधिकारों को मान्यता दी जाए। इसी आवश्यकता के परिणामस्वरूप बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा विकसित हुई।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

बहुसंस्कृतिवाद का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज के सभी सांस्कृतिक समूहों को सम्मान और समान अवसर प्राप्त हों। इसके अंतर्गत यह माना जाता है कि किसी एक संस्कृति को समाज पर पूरी तरह हावी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक सांस्कृतिक समूह को अपनी भाषा, परंपरा और जीवन शैली को बनाए रखने का अधिकार होना चाहिए। इससे समाज में समानता और सहिष्णुता की भावना विकसित होती है।

बहुसंस्कृतिवाद का एक महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक पहचान की मान्यता है। कई बार अल्पसंख्यक समुदायों की संस्कृति और परंपराएँ प्रमुख संस्कृति के प्रभाव में दब जाती हैं। बहुसंस्कृतिवाद इस स्थिति का विरोध करता है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि सभी संस्कृतियों को समान सम्मान मिले। इसके माध्यम से समाज में विविधता को स्वीकार करने और उसका सम्मान करने की भावना विकसित होती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इसके अतिरिक्त बहुसंस्कृतिवाद सामाजिक न्याय को भी बढ़ावा देता है। समाज में कई बार कुछ सांस्कृतिक समूह ऐतिहासिक रूप से वंचित या उपेक्षित रहे हैं। बहुसंस्कृतिवाद यह सुझाव देता है कि ऐसे समूहों को विशेष संरक्षण और अवसर दिए जाएँ ताकि वे समाज में समान स्तर पर भागीदारी कर सकें।

हालाँकि बहुसंस्कृतिवाद की कुछ आलोचनाएँ भी की जाती हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि यदि सांस्कृतिक भिन्नताओं को अत्यधिक महत्व दिया जाए तो समाज में विभाजन की भावना उत्पन्न हो सकती है। इससे राष्ट्रीय एकता और सामूहिक पहचान कमजोर हो सकती है। इसके अलावा कुछ लोग यह भी कहते हैं कि सभी सांस्कृतिक परंपराएँ समान रूप से स्वीकार्य नहीं होती, क्योंकि कुछ परंपराएँ मानवाधिकारों या समानता के सिद्धान्तों के विरुद्ध हो सकती हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

फिर भी अनेक विद्वान मानते हैं कि आधुनिक समाजों में बहुसंस्कृतिवाद अत्यंत उपयोगी है। यह समाज में विविधता को स्वीकारने और सम्मान देने का एक प्रभावी तरीका है।

[CLICK HERE](#)

पारस्परिक समझ विकसित होती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इस प्रकार बहुसंस्कृतिवाद एक ऐसी अवधारणा है जो समाज में मौजूद सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करती है और उसे सकारात्मक रूप में देखने का प्रयास करती है। यह समानता, सम्मान और सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर आधारित है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में यह सामाजिक समरसता और न्याय को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**3 . यूनिवर्सल (सार्वभौमिक) लोकतंत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्भव और विकास की व्याख्या कीजिए।**

Found in Dec 2020 ( 2 ), June 2021 ( 2 ), June 2022 ( 2 ), June 2023 ( 2 ), Dec 2023 ( 2 ), Dec 2024 ( 2 )

बीसवीं सदी को लोकतंत्र के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस सदी में लोकतांत्रिक व्यवस्था का विस्तार हुआ और अनेक देशों ने लोकतंत्र को शासन प्रणाली के रूप में अपनाया। लोकतंत्र का मूल विचार यह है कि शासन की शक्ति जनता के हाथ में होती है और जनता अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन में भाग लेती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

बीसवीं सदी की शुरुआत में लोकतंत्र मुख्य रूप से कुछ यूरोपीय देशों और उत्तर अमेरिका तक सीमित था। लेकिन समय के साथ इसका विस्तार अन्य क्षेत्रों में भी हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के बाद कई साम्राज्यों का पतन हुआ और अनेक नए राष्ट्र अस्तित्व में आए। इन नए राष्ट्रों ने

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाने का प्रयास किया।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोकतंत्र के विकास को और अधिक गति मिली। इस युद्ध के बाद उपनिवेशवाद का अंत होने लगा और एशिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों ने स्वतंत्रता प्राप्त की। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद इन देशों ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया ताकि जनता को शासन में भागीदारी मिल सके।

बीसवीं सदी में लोकतंत्र के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण शिक्षा और जागरूकता का बढ़ना भी था। जब लोगों में शिक्षा का प्रसार हुआ तो वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक हुए। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को बल मिला और जनता ने शासन में अपनी भागीदारी की मांग की।

इसके अतिरिक्त मानवाधिकारों की अवधारणा ने भी लोकतंत्र को मजबूत किया। बीसवीं सदी के अन्त में यह सिद्ध हो गया कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। इसी कारण अनेक देशों में लोकतांत्रिक मूल्यों को शामिल किया।

# Get All Repeated Questions With Answer

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

हालाँकि बीसवीं सदी में लोकतंत्र को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। कुछ देशों में साम्राज्यवाद और अधिपत्यवादी शासन स्थापित हो गए। फिर भी लोकतांत्रिक मूल्यों को अर्थ और अधिक स

[CLICK HERE](#)

बीसवीं सदी के अंत तक लोकतंत्र विश्व की सबसे प्रमुख शासन व्यवस्था बन गया। आज अधिकांश देशों में किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली मौजूद है। लोकतंत्र का विकास केवल राजनीतिक व्यवस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी इसके प्रभाव को देखा जा सकता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इस प्रकार बीसवीं सदी में लोकतंत्र का व्यापक विस्तार हुआ। यह सदी लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवाधिकारों और जनभागीदारी के विकास की सदी के रूप में जानी जाती है।

### 4 . नारीवाद के मुख्य सिद्धान्त और इसके विभिन्न प्रकारों की चर्चा कीजिए।

Found in June 2021 ( 8 ), Dec 2021 ( 9 ), June 2022 ( 8 ), Dec 2022 ( 9 ), Dec 2024 ( 9 )

**उत्तर :** नारीवादी विचारधारा समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच मौजूद असमानताओं को समझने और उन्हें समाप्त करने का प्रयास करती है। इस संदर्भ में नारीवादी विचारकों ने लिंग और जेंडर के बीच अंतर को स्पष्ट रूप से समझाया है। उनके अनुसार इन दोनों शब्दों का अर्थ अलग-अलग है और इनका संबंध मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं से होता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नारीवादी दृष्टिकोण के अनुसार लिंग का संबंध मुख्य रूप से जैविक और प्राकृतिक भिन्नताओं से होता है। यह मनुष्य के शरीर की संरचना, प्रजनन संबंधी विशेषताओं और प्राकृतिक गुणों से जुड़ा होता है। उदाहरण के

लिए किसी व्यक्ति का पुरुष या महिला होना जैविक लिंग के आधार पर निर्धारित होता है। यह अंतर प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है और इसे सामान्य रूप से बदला नहीं जा सकता।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इसके विपरीत जेंडर का संबंध सामाजिक और सांस्कृतिक निर्माण से होता है। समाज विभिन्न भूमिकाओं, अपेक्षाओं और व्यवहारों को पुरुषों

और महिलाओं के साथ जोड़ देता है। जैसे कई समाजों में यह माना जाता है कि पुरुषों का कार्य बाहर जाकर काम करना है और महिलाओं का कार्य घर और परिवार की देखभाल करना है। नारीवादी विचारकों के अनुसार ये भूमिकाएँ प्राकृतिक नहीं हैं बल्कि समाज द्वारा बनाई गई हैं।

नारीवादियों का मानना है कि जेंडर की अवधारणा के माध्यम से समाज में असमानताएँ पैदा होती हैं। जब समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित करता है, तो अक्सर महिलाओं को कम महत्व दिया जाता है। इससे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी के अवसर कम मिलते हैं। इसलिए नारीवादी विचारक जेंडर आधारित भेदभाव का विरोध करते हैं।

नारीवादी विचारधारा यह भी बताती है कि जेंडर की भूमिकाएँ समय और स्थान के अनुसार बदल सकती हैं। जो कार्य किसी समाज में पुरुषों से जुड़े माने जाते हैं, वही कार्य किसी दूसरे समाज में महिलाओं से भी जुड़े हो सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जेंडर की अवधारणा स्थायी नहीं होती बल्कि सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नारीवादी यह भी कहते हैं कि जेंडर आधारित धारणाएँ समाज में शक्ति और अधिकारों के असमान वितरण को बनाए रखती हैं। जब महिलाओं को कमजोर या कम सक्षम माना जाता है, तो उन्हें नेतृत्व और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से दूर रखा जाता है। इस प्रकार जेंडर की अवधारणा सामाजिक असमानता को मजबूत करती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इसी कारण नारीवादी विचारधारा यह सुझाव देती है कि समाज में लिंग और जेंडर के अंतर को समझना आवश्यक है। यदि यह स्वीकार कर लिया जाए कि जेंडर की भूमिकाएँ सामाजिक रूप से निर्मित हैं, तो उन्हें बदला भी जा सकता है। इससे महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि नारीवादी विचारकों ने लिंग और जेंडर के बीच अंतर को स्पष्ट करके यह दिखाया कि महिलाओं की असमान स्थिति केवल जैविक कारणों से नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं के कारण ही उत्पन्न है। समाज के अंदरूनी ढांचे में समय से समाज में लैंगिक समानता स्थापित करने के प्रयासों को नई दिशा मिली है।

**Get All Repeated  
Questions With  
Answer**

**CLICK HERE**

### 5 . नागरिकता की अवधारणा और इसके विभिन्न मापदण्डों या दृष्टिकोणों का परीक्षण कीजिए।

Found in June 2020 ( 5 ), Dec 2021 ( 7 ), June 2023 ( 10 ),  
Dec 2023 ( 8 ), Dec 2024 ( 8 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नागरिकता किसी भी राज्य और उसके नागरिकों के बीच संबंध को दर्शाने वाली एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति को किसी विशेष राज्य का सदस्य माना जाता है और उसे उस राज्य के भीतर कुछ अधिकार और कर्तव्य प्राप्त होते हैं। नागरिकता के माध्यम से व्यक्ति को राजनीतिक, सामाजिक और कानूनी अधिकार मिलते हैं, साथ ही उससे यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह राज्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का पालन करे।

नागरिकता को समझने के लिए विभिन्न मापदण्डों का उपयोग किया जाता है। इन मापदण्डों के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि कौन व्यक्ति किसी राज्य का नागरिक माना जाएगा। इन मापदण्डों में जन्म, वंश, निवास और कानूनी प्रक्रिया जैसे तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नागरिकता का पहला प्रमुख मापदण्ड जन्म के आधार पर नागरिकता प्राप्त करना है। इस सिद्धांत के अनुसार यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी देश की सीमा के भीतर होता है तो उसे उस देश का नागरिक माना जा सकता है। इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को राज्य की सदस्यता प्राप्त हो सके और वे उस समाज का हिस्सा बन सकें।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

दूसरा महत्वपूर्ण मापदण्ड वंश के आधार पर नागरिकता प्राप्त करना है। इसके अनुसार यदि किसी व्यक्ति के माता-पिता किसी देश के नागरिक हैं, तो उस व्यक्ति को भी उसी देश की नागरिकता प्राप्त हो सकती है, चाहे उसका जन्म किसी अन्य स्थान पर क्यों न हुआ हो। इस प्रकार नागरिकता को परिवार और वंश के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। तीसरा मापदण्ड निवास से संबंधित है। यदि कोई व्यक्ति किसी देश में लंबे समय तक निवास करता है और उस समाज का सक्रिय सदस्य बन जाता है, तो उसे नागरिकता प्रदान की जा सकती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से राज्य उन लोगों को नागरिकता देता है जो लंबे समय से उस समाज का हिस्सा बन चुके होते हैं और उसके विकास में योगदान दे रहे होते हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इसके अतिरिक्त नागरिकता का एक अन्य महत्वपूर्ण मापदण्ड कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से नागरिकता प्राप्त करना है। इसमें व्यक्ति निर्धारित नियमों और शर्तों को पूरा करके नागरिकता के लिए आवेदन करता है और राज्य की स्वीकृति प्राप्त होने पर उसे नागरिकता प्रदान की जाती है। इस प्रक्रिया को सामान्यतः नागरिकता ग्रहण करने की प्रक्रिया कहा जाता है।

# Get All Repeated Questions With Answer

नागरिकता के साथ कई महत्वपूर्ण अधिकार जुड़े होते हैं, जैसे मतदान का अधिकार, सार्वजनिक पदों पर भर्ती होने का अधिकार और राज्य की सुरक्षा का अधिकार। इसके साथ ही नागरिकों के कुछ कर्तव्य भी होते हैं, जैसे कानून का पालन करना, समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना और राज्य की रक्षा करना।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)  
**CLICK HERE**

अंततः यह नागरिकता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करती है। इसके विभिन्न मापदण्ड यह

निर्धारित करते हैं कि कौन व्यक्ति राज्य का सदस्य होगा और उसे कौन-कौन से अधिकार और कर्तव्य प्राप्त होंगे। इसी आधार पर एक संगठित और जिम्मेदार समाज का निर्माण संभव होता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

### 6 . राष्ट्रवाद के विभिन्न सिद्धान्तों, इसके उदय और विकास की व्याख्या कीजिए।

Found in Dec 2020 ( 7 ), Dec 2022 ( 4 ), June 2023 ( 9 ), June 2024 ( 8 ), Dec 2024 ( 5 )

राष्ट्रवाद आधुनिक राजनीतिक विचारधारा की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सामान्य रूप से राष्ट्रवाद का अर्थ उस भावना से है जिसमें लोग अपने राष्ट्र के प्रति गहरा प्रेम, निष्ठा और एकता का अनुभव करते हैं। राष्ट्रवाद लोगों को एक साझा पहचान प्रदान करता है और उन्हें एक राष्ट्र के रूप में संगठित करता है। विभिन्न विद्वानों ने राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और स्वरूप को समझाने के लिए अलग-अलग सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं।

राष्ट्रवाद का पहला महत्वपूर्ण सिद्धान्त सांस्कृतिक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति, भाषा, परम्पराओं और ऐतिहासिक अनुभवों से बनती है। जब किसी समाज के लोग समान संस्कृति और परम्पराओं को साझा करते हैं, तो उनमें एकता और सामूहिक पहचान की भावना विकसित होती है। इस प्रकार सांस्कृतिक तत्व राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

दूसरा सिद्धान्त राजनीतिक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्रवाद का संबंध मुख्य रूप से राजनीतिक संगठन और राज्य की स्थापना से

होता है। इसमें यह माना जाता है कि एक राष्ट्र को अपने राजनीतिक निर्णय स्वयं लेने का अधिकार होना चाहिए। इसलिए राष्ट्रवाद लोगों को आत्मनिर्णय और स्वतंत्र राज्य की स्थापना के लिए प्रेरित करता है। तीसरा सिद्धान्त आर्थिक सिद्धान्त है। इस दृष्टिकोण के अनुसार राष्ट्रवाद का विकास आर्थिक परिस्थितियों से भी जुड़ा होता है। जब किसी क्षेत्र में आर्थिक हित समान होते हैं, तो लोग अपने आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एकजुट हो जाते हैं। औद्योगिक विकास, व्यापार और आर्थिक सहयोग भी राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करते हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

चौथा सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्रवाद मानव की भावनाओं और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से जुड़ा होता है। लोगों में अपने समूह के प्रति गर्व, सुरक्षा और पहचान की भावना होती है। यही भावना राष्ट्रवाद को जन्म देती है और लोगों को अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित बनाती है।

**Get All Repeated  
Questions With  
Answer**

**CLICK HERE**

अंततः कहा जा सकता है कि राष्ट्रवाद एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है। इसके विभिन्न सिद्धान्त राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और विकास

को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास करते हैं। इन सिद्धान्तों के माध्यम से हम राष्ट्रवाद के स्वरूप और उसके प्रभाव को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

### 7 . लोकतंत्र में नागरिक समाज के महत्त्व और इसके राज्य से सम्बन्ध की चर्चा कीजिए।

Found in Dec 2020 ( 8 ), June 2023 ( 6 ), Dec 2023 ( 10 ), Dec 2024 ( 10 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नागरिक समाज और राज्य के बीच सम्बन्ध राजनीतिक सिद्धान्त का एक महत्वपूर्ण विषय है। नागरिक समाज से आशय उन सामाजिक संगठनों, समूहों और संस्थाओं से है जो राज्य के बाहर होते हुए भी समाज के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें सामाजिक संगठन, स्वैच्छिक संस्थाएँ, व्यापारिक संघ, धार्मिक संस्थाएँ और विभिन्न प्रकार के जनसंगठन शामिल होते हैं।

राज्य एक राजनीतिक संस्था है जिसका मुख्य कार्य समाज में कानून और व्यवस्था बनाए रखना तथा शासन का संचालन करना होता है। राज्य के पास कानून बनाने और उन्हें लागू करने की शक्ति होती है। नागरिक समाज और राज्य दोनों ही समाज के विकास और व्यवस्था को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नागरिक समाज और राज्य के बीच संबंध सहयोग और संतुलन पर आधारित होता है। नागरिक समाज लोगों के हितों और आवश्यकताओं को व्यक्त करता है, जबकि राज्य उन हितों को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ और कानून बनाता है। इस प्रकार नागरिक समाज राज्य को यह बताने

का कार्य करता है कि जनता की अपेक्षाएँ और समस्याएँ क्या हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

नागरिक समाज लोकतंत्र को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब लोग विभिन्न संगठनों और समूहों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करते हैं, तो शासन अधिक उत्तरदायी और पारदर्शी बनता है। नागरिक समाज सरकार की नीतियों और कार्यों की आलोचना भी कर सकता है, जिससे शासन में सुधार की संभावना बढ़ती है।

इसके अतिरिक्त नागरिक समाज सामाजिक जागरूकता और जनभागीदारी को बढ़ाने का कार्य करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और मानवाधिकार जैसे अनेक क्षेत्रों में नागरिक समाज की संस्थाएँ सक्रिय रहती हैं। इनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं को सामने लाया जाता है और उनके समाधान के लिए प्रयास किए जाते हैं।

हालाँकि कभी-कभी नागरिक समाज और शासन के बीच मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं। जब राज्य की नीतियाँ लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं हैं, तो नागरिक समाज शासन के माध्यम से अपनी असहमति व्यक्त कर सकता है। फिर भी यह मतभेद लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अंततः समाज के हित में सुधार की दिशा में काम करते हैं।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

[CLICK HERE](#)

अंततः नागरिक समाज और शासन के बीच संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नागरिक समाज और शासन मिलकर समाज में व्यवस्था, न्याय और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बनाए रखने का कार्य करते हैं।

### 8 . आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की मुख्य विशेषताओं का वर्णन या व्याख्या कीजिये।

Found in Dec 2020 ( 1 ), June 2022 ( 1 ), June 2023 ( 1 ), Dec 2023 ( 1 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त का विकास मुख्य रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में हुआ। इस काल में विद्वानों ने राजनीति को केवल विचारों और आदर्शों तक सीमित न रखकर उसे एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन का विषय बनाने का प्रयास किया। पहले के राजनीतिक विचार अधिकतर नैतिकता, आदर्शों और दार्शनिक चिंतन पर आधारित होते थे, लेकिन आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त ने अनुभव, तथ्यों और व्यवहारिक अध्ययन को महत्व दिया।

आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की पहली प्रमुख विशेषता यह है कि यह राजनीति के अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने का प्रयास करता है। इसमें तथ्यों का विश्लेषण, अवलोकन और प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष निकालने की पद्धति अपनाई जाती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए केवल आदर्शवादी विचार पर्याप्त नहीं होते, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों और व्यवहार का अध्ययन भी आवश्यक होता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसका अनुभवपरक दृष्टिकोण है। आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त में यह माना जाता है कि राजनीतिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और व्यवहार को समझने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव और वास्तविक तथ्यों का अध्ययन जरूरी है। इसलिए चुनाव, राजनीतिक दलों, नेतृत्व, जनमत और शासन व्यवस्था का अध्ययन वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर किया जाता है।

तीसरी विशेषता यह है कि इसमें अंतःविषयक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त केवल राजनीति विज्ञान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान और इतिहास जैसे अन्य विषयों की सहायता भी लेता है। इससे राजनीति के विभिन्न पहलुओं को अधिक व्यापक और गहराई से समझने में मदद मिलती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

चौथी विशेषता मूल्य-निरपेक्षता की प्रवृत्ति है। आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त में यह प्रयास किया गया कि राजनीतिक अध्ययन करते समय व्यक्तिगत विचारों और नैतिक निर्णयों को कम से कम महत्व दिया जाए और तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष अध्ययन किया जाए। हालांकि बाद में कुछ विद्वानों ने यह भी माना कि पूरी तरह मूल्य-निरपेक्ष होना संभव नहीं है।

पाँचवीं विशेषता व्यवहारवाद का प्रभाव है। व्यवहारवाद ने राजनीतिक अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित बनाने का प्रयास किया।

इसके अंतर्गत राजनीतिक व्यवहार, नैतिकता की प्रवृत्ति, नैतिकता की शैली और राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया है।

अंत में, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त का उद्देश्य केवल राजनीतिक संस्थाओं का वर्णन करना नहीं है, बल्कि राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझना और उनका विश्लेषण करना भी है। इस प्रकार आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त व्यवस्थित, वैज्ञानिक और व्यवस्थित है।

वैज्ञानिक और व्यवस्थित है। राजनीति विज्ञान एक विकसित हुआ।

**Get All Repeated  
Questions With  
Answer**

**CLICK HERE**

### 9 . अधिकारों (प्राकृतिक अधिकारों सहित) के अर्थ और महत्व की व्याख्या कीजिए।

Found in June 2020 ( 2 ), June 2021 ( 10 a ), Dec 2023 ( 3 ), Dec 2024 ( 3 )

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

प्राकृतिक अधिकार का सिद्धान्त राजनीतिक दर्शन की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसके अनुसार मनुष्य को कुछ अधिकार जन्म से ही प्राप्त होते हैं और ये अधिकार किसी राज्य या सरकार द्वारा दिए गए नहीं होते। ये अधिकार मानव के स्वभाव और उसकी प्राकृतिक स्थिति से जुड़े होते हैं। इसलिए इन्हें प्राकृतिक अधिकार कहा जाता है। जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति जैसे अधिकारों को सामान्यतः प्राकृतिक अधिकारों के रूप में माना जाता है।

प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त का विकास मुख्य रूप से आधुनिक युग में हुआ। अनेक विचारकों ने इस सिद्धान्त को स्पष्ट करने का प्रयास किया। उनके अनुसार मनुष्य जब प्राकृतिक अवस्था में रहता था तब भी उसे कुछ मूलभूत अधिकार प्राप्त थे। बाद में जब राज्य और समाज का गठन हुआ तब भी ये अधिकार समाप्त नहीं हुए, बल्कि राज्य का मुख्य उद्देश्य इन अधिकारों की रक्षा करना बन गया।

प्राकृतिक अधिकारों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि ये सार्वभौमिक माने जाते हैं। इसका अर्थ है कि ये अधिकार हर व्यक्ति को केवल मानव होने के कारण प्राप्त होते हैं। इनमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता। इसी कारण आधुनिक मानवाधिकार की अवधारणा भी इसी सिद्धान्त से प्रभावित मानी जाती है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

इस सिद्धान्त का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह राज्य की शक्ति को सीमित करता है। यदि अधिकार प्राकृतिक हैं तो राज्य उन्हें मनमाने ढंग से समाप्त नहीं कर सकता। राज्य का कार्य केवल इन अधिकारों की सुरक्षा करना है। यदि राज्य इन अधिकारों का उल्लंघन करता है तो नागरिकों को उसके विरुद्ध विरोध करने का अधिकार भी प्राप्त होता है। इस प्रकार प्राकृतिक अधिकार का सिद्धान्त नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

हालाँकि इस सिद्धान्त की कुछ आलोचनाएँ भी की गई हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि प्राकृतिक अधिकारों की अवधारणा बहुत अधिक आदर्शवादी है और इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता कि ये अधिकार वास्तव में प्राकृतिक अवस्था में मौजूद थे। इसके अलावा विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में अधिकारों की अवधारणा अलग-अलग होती है, इसलिए सभी के लिए समान प्राकृतिक अधिकारों की बात करना व्यावहारिक रूप से कठिन माना जाता है।

## Get All Repeated

## Questions With

## Answer

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

[CLICK HERE](#)

आधुनिक संविधान भी नागरिकों को अनेक मौलिक अधिकार प्रदान करते हैं, जिनकी प्रेरणा इसी सिद्धान्त से मानी जाती है।

इस प्रकार प्राकृतिक अधिकार का सिद्धान्त मानव स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ और आलोचनाएँ हैं, फिर भी आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसका महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण बना हुआ है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

### 10 . उदारवाद की अवधारणा को परिभाषित कीजिये और इसकी विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

Found in June 2021 ( 4 ), Dec 2022 ( 7 ), June 2024 ( 1 ), Dec 2024 ( 4 )

उदारवाद आधुनिक राजनीतिक विचारधारा की एक महत्वपूर्ण धारा है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, अधिकारों और गरिमा को सर्वोच्च महत्व देती है। इस विचारधारा का मूल उद्देश्य ऐसा समाज और राज्य स्थापित करना है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचारों को व्यक्त करने, अपनी क्षमताओं का विकास करने और अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। उदारवाद का विकास मुख्य रूप से यूरोप में हुआ और समय के साथ यह लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

उदारवाद का मुख्य सिद्धांत यह है कि व्यक्ति समाज और राज्य का केंद्र है। इसलिए राज्य का कार्य व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा करना होना चाहिए। उदारवादी विचारकों का मानना है कि जब व्यक्ति को

## MPS-001 Most Repeated Questions

स्वतंत्रता मिलती है तो वह अपनी प्रतिभा और क्षमता का बेहतर विकास कर सकता है। इससे न केवल व्यक्ति का बल्कि पूरे समाज का विकास संभव होता है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

उदारवाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को विचार, अभिव्यक्ति, धर्म और संगठन की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। इन स्वतंत्रताओं के बिना मनुष्य का पूर्ण विकास संभव नहीं है। इसलिए उदारवाद इन अधिकारों की सुरक्षा पर विशेष बल देता है।

उदारवाद का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत कानून का शासन है। इसका अर्थ यह है कि राज्य में सभी नागरिकों पर समान रूप से कानून लागू होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति या संस्था कानून से ऊपर नहीं होनी चाहिए। कानून का शासन नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है और शासन को मनमानी करने से रोकता है।

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू सीमित सरकार की अवधारणा है। उदारवादी विचारधारा यह मानती है कि राज्य की शक्तियों पर नियंत्रण होना चाहिए। यदि सरकार को अत्यधिक शक्तियाँ दे दी जाएँ तो वह नागरिकों की स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है। इसलिए उदारवाद यह मानता है कि सरकार का मुख्य कार्य नागरिकों की सुरक्षा करना और उनके अधिकारों की रक्षा करना है।

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

उदारवाद लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का भी समर्थन करता है। लोकतंत्र के माध्यम से जनता को अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने का अधिकार मिलता है और सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी बनती है। इससे शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही बनी रहती है।

इसके अतिरिक्त उदारवाद समान अवसर के सिद्धांत को भी महत्व देता है। इसका अर्थ है कि समाज में सभी व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार और प्रगति के समान अवसर मिलने चाहिए। किसी भी व्यक्ति के साथ जाति,

[FarLearner.com](http://FarLearner.com)

धर्म, लिंग या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। हालाँकि उदारवाद की कुछ आलोचनाएँ भी की गई हैं। कुछ विचारकों का मानना है कि उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता पर अत्यधिक जोर देता है और सामाजिक जिम्मेदारियों को अपेक्षाकृत कम महत्व देता है। इसके अलावा यह भी कहा गया है कि अत्यधिक आर्थिक स्वतंत्रता से समाज में असमानता बढ़ सकती है।

फिर भी उदारवाद आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है। इसने लोकतंत्र, मानव अधिकारों और समानता की अवधारणाओं को मजबूत किया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि उदारवाद ऐसी विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, अधिकारों और समान अवसरों के माध्यम से एक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक समाज की

**Get All Repeated  
Questions With  
Answer**

**CLICK HERE**